GOVERNMENT DEGREE COLLEGE, CHODAVARAM

ANAKAPALLI DISTRICT

ANDHRA PRADESH

BOOK CHAPTERS

1. Smt B.LAXMI

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:10(5), October: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd October 2022
Publication Date:10th November 2022
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf
DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.10.98
www.ijmer.in

समकालीन साहित्य में वृद्धो की स्थिति

Dr.B.Laxmi Assistant professor
H.O.D. of Hindi
Govt. Degree College CHODAVARAM,
Ankapalli Visakhapatnam

स्वतंत्र देश की युगीन परिस्थितियों को सार्थक अभिव्यक्ति देने हेतु हिन्दी साहित्यकारों ने विभिन्न विधाओं के अंतर्गत पर्याप्त मात्रा में साहित्य सृजन किया है। समाज में परंपरागत मूल्यों का विघटन हो रहा है और परिवर्तित परिवेश के अनुरूप विभिन्न मूल्यों के संक्रमण के परिणामस्वरूप कई समस्यायें उत्पन्न हो रही है। अर्थाजन को जितना महत्व दिया जा रहा है, उतना संबंधों को नहीं जिसे एक समस्या के रूप में हिन्दी के कई कथाकारों ने अपनी रचनाओं में अंकित किया है। अहं और स्वार्थ के कारण मानवीय रागात्मक संबंध टूट रहे है, फलस्वरूप समाज में पारिवारिक संबंध भी विघटित हो रहे है।

वृद्धावस्था वह काल सन्ध्या है ,जहाँ व्यक्ति अपनी शैशवावस्था रूपी प्रभात की चंचलता से होकर, दिन रूपी यौवनावस्था को झेलते हुए धीरे–धीरे चलकर आती वृद्धावस्था रूपी संध्या-शीतलता की छाया में विश्राम करता हुआ अपना समय गुजारता है। वृद्धावस्था में मनुष्य शारीरिक रूप से कमजोर हो जाता है। वृद्ध जीवन अनुभवों का वह खजाना है, जिसे सहेजकर रखना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है और आवश्यकता भी। अपनों से थोड़ी-सी आत्मीयता और स्नेह के अलावा वृद्धो की और कोई अभिलाषा नहीं रहती है। जिससे उन्हें आश्वासन मिले की वे सुरक्षित है। वृद्धों का पुनर्वास अत्यंत गंभीर समस्या है। वृद्ध लोग समाज की जिम्मेदारी है। इसके लिए युवा नागरिको को जागरूक करना आवश्यक है। अनुभवी और वरिष्ठ नागरिक देश के लिए वरदान है, इनका मान-सम्मान बचाकर रखना हमारा कर्तव्य है। मनुष्य अपनी सारी जिन्दगी घर-परिवार के लिए मेहनत कर वृद्धावस्था में दूसरो पर निर्भर हो जाता है। आज के यान्त्रिक जीवन में एक-दूसरे के लिए किसी के पास समय नहीं है। अपने माता - पिता की वृद्धावस्था में तीव्र उपेक्षा कर आज की पीढी जो व्यवहार करने लगी है, वह दूषित और मानवता के लिए अहितकारी प्रमाणित हो रही है। हिन्दी के कई कथाकारो ने इस सत्य को एक समस्या के रूप में स्वीकार किया है और इस समस्या से जुडे हुऐ कई पक्षों का यथार्थ अंकन किया है।

"माँ" कहानी में लेखक चंद्रकांत कक्कड जी ने एक बेटे के माध्यम से अपनी माँ की भावनाओं का वर्णन किया है। माँ हमेशा अपने आप में खोई रहती है। अपना संपूर्ण जीवन बेटे के

2.

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :7.816(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:4(1), April: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues): www.ijmer.in
Digital Certificate of Publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd April 2022
Publication Date:10th May 2022
Publisher: Sucharitha Publication, India
DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.04.19

प्रकृति के विविध रूप समकालीन काव्य के सन्दर्भ में

Dr. B. Laxmi
Assistant Professor
Department of Hindi Government Degree College
Chodavaram, Visakhapatnam, Andhra Pradesh, India

साहित्य और समाज का वही सम्बन्ध है, जो आत्मा का शरीर से होता है। साहित्य समाज रूपी शरीर की आत्मा है, जो अजर-अमर है। कहा जाता है कि समाज नष्ट हो सकता है, राष्ट्र नष्ट हो सकता है किन्तु साहित्य का नाश कभी नहीं हो सकता। साहित्य समाज की चेतना में सांस लेता है। इसमें मानव जीवन की आत्मा का स्पन्दन ध्वनित होता है। साहित्य के अध्ययन से मानव जीवन शैली और सामाजिक व्यवस्था का ज्ञान आसानी से लगाया जा सकता है। हिंदी साहित्य में समाज के अवधारणाओं का प्रतिबिम्ब अक्षुण्य, अनुपम और अपार है। प्रकृति की क्रोड में पला बड़ा हुआ मनुष्य का, प्रकृति से अनादि काल से अक्षुण्ण सम्बन्ध है। आज के समकालीन प्रवाह कि बात करे तो, रस -रम्य और रंजक मन को आह्लादित करने वाली प्रकृति के साथ ही मनुष्य का जीवन है। प्रकिति मनुष्य का प्रेरणा स्त्रोत है, जो मानव का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक तीनो ही दृष्टियों से पोषण करती है और आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। प्रकृति सौंदर्य का कोष है। कल्पना का आह्लादित लोक है। भावों का समुन्दर है और विचारों की अटूट कड़ी है, जिसे कवियों ने अत्यंत ही सजीव रूप से अपनी कविताओं में चित्रित किया है। मैथलीशरण गुप्त की पंचवटी काव्य में प्रकृति की रमणीयता और व्यापकता गेयात्मक से प्रस्तुत किया गया है -

चारु चंद्र की चंचल किरणे, खेल रही थी जल-थल में।
स्वच्छ चांदनी बिछी हुई है, अवनी और अम्बर तल में।
पुलक प्रकट करती है धरती, हरित तृणों के नोको से।
मानो झूम रहे है तरु भी, मंद पवन के झोको से॥

पूर्णिमा की छटा में रात्री की प्राकृतिक सौंदर्य का चित्र आँखों के सामने छा जाता है। इस प्रकार अनंत जल -थल और अम्बर तक के रमणीय प्रकृति के विविध रूपों का अंकन काव्य साहित्य में शोभायमान है।

समकालीन कवियों ने प्रकृति के सौंदर्य की गूँज को अद्भुत रूप से प्रस्तुत किया है। कवयित्री रमणिका गुप्त ने "पूर्वांचल एक कविता यात्रा" कविता संग्रह में मणिपुर, मिजोरम, नागालैंड और आसाम की प्रकृति का, वहां की घाटियों बादलो, नदियों, झरनो और पहाड़ो की अद्भुत सुंदरता का हृदयग्राही चित्रण किया है। ये चित्र अत्यंत ही मनोहर और आकर्षक है -

किसी ने सबेरे –सबेरे,
बादलो का सैलाब ठेल दिया।
बादलों में तिरते पहाड़,

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :7.816(2021); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:5(1), May:2021
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in
Digital certificate of publication:http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf
DOI:http://ijmer.in.doi./2021/10.05.155
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 10th May- Publication Date:30th May 2021

अंतर्जालीय शिक्षा व्यवस्था और नौकरी की सम्भावनाएँ-कोविड 19 के सन्दर्भ में

Dr.B. Laxmi
Assistant Professor of Hindi
S.G.A.G.D. College
Yellamanchili, Visakhapatnam

सकारात्मक सोच व्यक्ति को विकास के मार्ग में ले जाता है। आज अंतर्जाल पूरी दुनिया को अपनी मुट्ठी में ले रखा है। शिक्षा के क्षेत्र में इ-लर्निंग एक धूम है। जिसमें अपनी रुचि के हिसाब से अपने कौशल का विकास करना छात्र के लिए संभव है। कोरोना महामारी के फलस्वरूप शिक्षा व्यवस्था और शैक्षणिक

2.Dr S.Satyanarayna

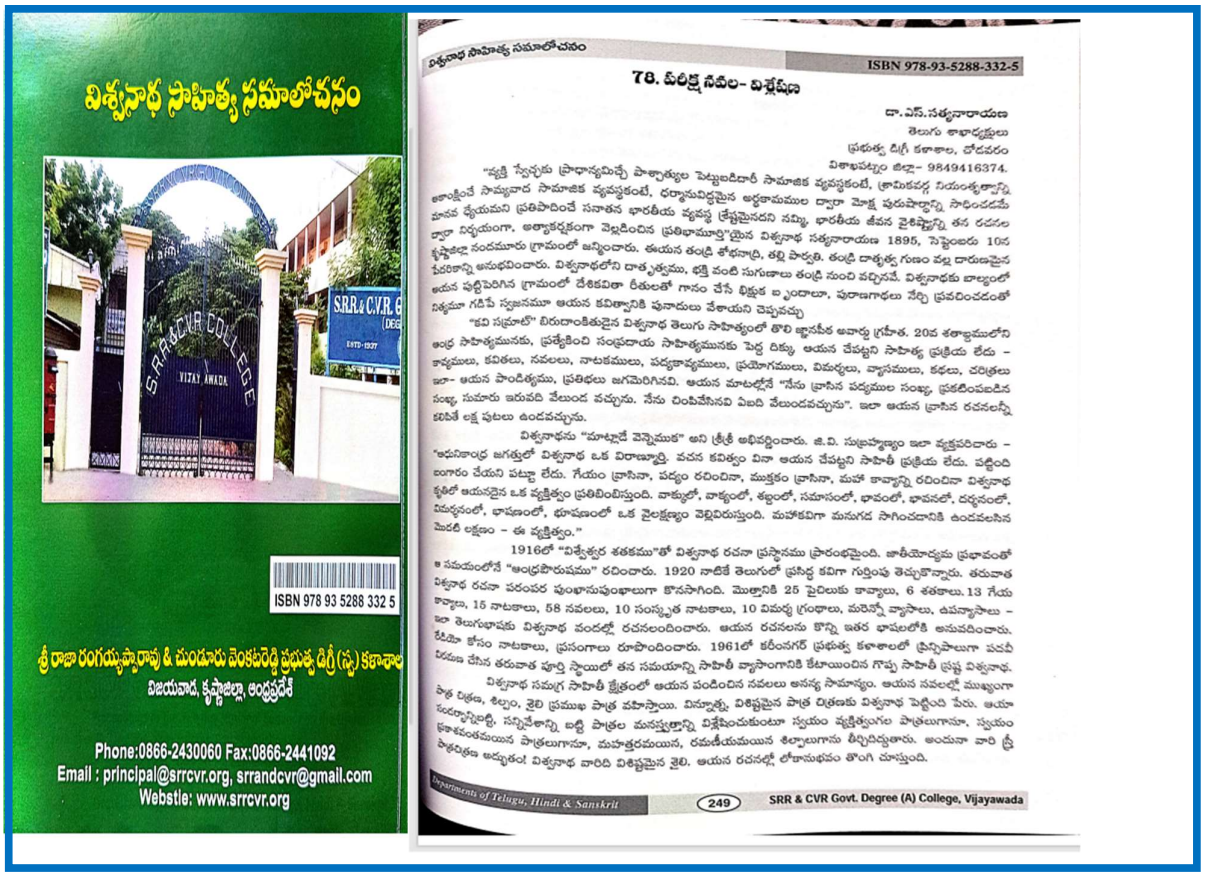

ISBN 978-93-5288-332-5

78. పరీక్ష నవల- విశ్లేషణ

డా. ఎస్. సత్యనారాయణ
తెలుగు శాఖాధ్యక్షులు
ప్రభుత్వ డిగ్రీ కళాశాల, చోడవరం
విశాఖపట్నం జిల్లా- 9849416374.

"వ్యక్తి స్వేచ్ఛకు ప్రాధాన్యమిచ్చే పాశ్చాత్యుల పెట్టుబడిదారీ సామాజిక వ్యవస్థకంటే, శ్రామికవర్గ నియంతృత్వాన్ని ఆకాంక్షించే సామ్యవాద సామాజిక వ్యవస్థకంటే, ధర్మానువిద్ధమైన అర్థకామముల ద్వారా మోక్ష పురుషార్థాన్ని సాధించడమే మానవ ధ్యేయమని ప్రతిపాదించే సనాతన భారతీయ వ్యవస్థ శ్రేష్ఠమైనదని నమ్మి, భారతీయ జీవన వైశిష్ట్యాన్ని తన రచనల ద్వారా నిర్భయంగా, అత్యాకర్షకంగా వెల్లడించిన ప్రతిభామూర్తి"యైన విశ్వనాథ సత్యనారాయణ 1895, సెప్టెంబరు 10న కృష్ణాజిల్లా నందమూరు గ్రామంలో జన్మించారు. ఈయన తండ్రి శోభనాద్రి, తల్లి పార్వతి. తండ్రి దాతృత్వ గుణం వల్ల దారుణమైన పేదరికాన్ని అనుభవించారు. విశ్వనాథలోని దాతృత్వము, భక్తి వంటి సుగుణాలు తండ్రి నుంచి వచ్చినవే. విశ్వనాథకు బాల్యంలో ఆయన పుట్టిపెరిగిన గ్రామంలో దేశికవితా రీతులతో గానం చేసే భిక్షుక బృందాలూ, పురాణగాథలు నేర్చి ప్రవచించడంతో నిత్యమూ గడిపే స్వజనమూ ఆయన కవిత్వానికి పునాదులు వేశాయని చెప్పవచ్చు

"కవి సమ్రాట్" బిరుదాంకితుడైన విశ్వనాథ తెలుగు సాహిత్యంలో తొలి జ్ఞానపీఠ అవార్డు గ్రహీత. 20వ శతాబ్దములోని ఆంధ్ర సాహిత్యమునకు, ప్రత్యేకించి సంప్రదాయ సాహిత్యమునకు పెద్ద దిక్కు ఆయన చేపట్టని సాహిత్య ప్రక్రియ లేదు - కావ్యములు, కవితలు, నవలలు, నాటకములు, పద్యకావ్యములు, ప్రయోగములు, విమర్శలు, వ్యాసములు, కథలు, చరిత్రలు ఇలా- ఆయన పాండిత్యము, ప్రతిభలు జగమెరిగినవి. ఆయన మాటల్లోనే "నేను వ్రాసిన పద్యముల సంఖ్య, ప్రకటింపబడిన సంఖ్య, సుమారు ఇరువది వేలుండ వచ్చును. నేను చింపివేసినవి ఏబది వేలుండవచ్చును". ఇలా ఆయన వ్రాసిన రచనలన్నీ కలిపితే లక్ష పుటలు ఉండవచ్చును.

విశ్వనాథను "మాట్లాడే వెన్నెముక" అని శ్రీశ్రీ అభివర్ణించారు. జి.వి. సుబ్రహ్మణ్యం ఇలా వ్యక్తపరిచారు - "ఆధునికాంధ్ర జగత్తులో విశ్వనాథ ఒక విరాణ్మూర్తి. వచన కవిత్వం వినా ఆయన చేపట్టని సాహితీ ప్రక్రియ లేదు. పట్టింది బంగారం చేయని పట్టూ లేదు. గేయం వ్రాసినా, పద్యం రచించినా, ముక్తకం వ్రాసినా, మహా కావ్యాన్ని రచించినా విశ్వనాథ కృతిలో ఆయనదైన ఒక వ్యక్తిత్వం ప్రతిబింబిస్తుంది. వాక్కులో, వాక్యంలో, శబ్దంలో, సమాసంలో, భావంలో, భావనలో, దర్శనంలో, విమర్శనంలో, భాషణంలో, భూషణంలో ఒక వైలక్షణ్యం వెల్లివిరుస్తుంది. మహాకవిగా మనుగడ సాగించడానికి ఉండవలసిన మొదటి లక్షణం - ఈ వ్యక్తిత్వం."

1916లో "విశ్వేశ్వర శతకము"తో విశ్వనాథ రచనా ప్రస్థానము ప్రారంభమైంది. జాతీయోద్యమ ప్రభావంతో ఆ సమయంలోనే "ఆంధ్రపౌరుషము" రచించారు. 1920 నాటికే తెలుగులో ప్రసిద్ధ కవిగా గుర్తింపు తెచ్చుకొన్నారు. తరువాత విశ్వనాథ రచనా పరంపర పుంఖానుపుంఖాలుగా కొనసాగింది. మొత్తానికి 25 పైచిలుకు కావ్యాలు, 6 శతకాలు. 13 గేయ కావ్యాలు, 15 నాటకాలు, 58 నవలలు, 10 సంస్కృత నాటకాలు, 10 విమర్శ గ్రంథాలు, మరెన్నో వ్యాసాలు, ఉపన్యాసాలు - ఇలా తెలుగుభాషకు విశ్వనాథ వందల్లో రచనలందించారు. ఆయన రచనలను కొన్ని ఇతర భాషలలోకి అనువదించారు. రేడియో కోసం నాటకాలు, ప్రసంగాలు రూపొందించారు. 1961లో కరీంనగర్ ప్రభుత్వ కళాశాలలో ప్రిన్సిపాలుగా పదవీ విరమణ చేసిన తరువాత పూర్తి స్థాయిలో తన సమయాన్ని సాహితీ వ్యాసాంగానికి కేటాయించిన గొప్ప సాహితీ స్రష్ట విశ్వనాథ.

విశ్వనాథ సమగ్ర సాహితీ క్షేత్రంలో ఆయన పండించిన నవలలు అనన్య సామాన్యం. ఆయన నవలల్లో ముఖ్యంగా పాత్ర చిత్రణ, శిల్పం, శైలి ప్రముఖ పాత్ర వహిస్తాయి. విస్పష్టమైన పాత్ర చిత్రణకు విశ్వనాథ పెట్టింది పేరు. ఆయా సందర్భాన్నిబట్టి, సన్నివేశాన్ని బట్టి పాత్రల మనస్తత్వాన్ని విశ్లేషించుకుంటూ స్వయం వ్యక్తిత్వంగల పాత్రలుగానూ, స్వయం ప్రకాశవంతమయిన పాత్రలుగానూ, మహత్తరమయిన, రమణీయమయిన శిల్పాలుగాను తీర్చిదిద్దుతారు. అందునా వారి స్త్రీ పాత్రచిత్రణ అద్భుతం! విశ్వనాథ వారిది విశిష్టమైన శైలి. ఆయన రచనల్లో లోకానుభవం తొంగి చూస్తుంది.

Department of Telugu, Hindi & Sanskrit (252) SRR & CVR Govt. Degree (A) College, Vijayawada

Scanned with OKEN Scanner

SHAITYA PRASTHANAM RNI NO.APTEL/2004/18396 Postal Regd. No.HSD/415/16-18
Date of Posting : 02.05.2017 . Date of Publication: 27.04.2017

If Un delivered please return to: Prasthanam, C/o M.H. Bhavan, Plot No.21/1, Near RTC Kalyana mandapam, Azamabad, Hyderabad - 500 020. Ph: 040-27660013, Cell: 9490099059

సంస్మరణ

మానేపల్లి జీవిత రేఖాచిత్రణ

- డా॥ ఎస్. సత్యనారాయణ
9849416374

1992లో హైదరాబాద్ తెలుగు యూనివర్శిటీలో "శ్రీకాకుళ గిరిజన రైతాంగ పోరాటం ప్రజా సాహిత్యం' అనే అంశంపై సిద్ధాంత వ్యాసం సమర్పించి పిహెచ్.డి.డిగ్రీ పొందారు. విశాఖ జిల్లా యలమంచిలి పట్టణంలో 1974లో 'అవగాహన' పేరుతో ఆధునిక ఆలోచనా వీచిక అనే సాహిత్యోద్యమ సంస్థను స్థాపించి అక్కడే స్థిర నివాసం ఏర్పాటు చేసుకున్నారు

1960 నుండి చివరి వరకు కథా రచనలోనే గాక వివిధ ప్రక్రియల్లో తలమునకలుగా ఉన్న పేరెన్నికగన్న రచయితల్లో డా॥ మానేపల్లిని ప్రముఖంగా పేర్కొనవచ్చు. డా॥ మానేపల్లిగా పేరుగాంచిన రచయిత పూర్తిపేరు మానేపల్లి సత్యనారాయణ. తూర్పుగోదావరి జిల్లా రాజమండ్రిలో 1944 మే నాల్గవ తేదీన జన్మించారు. తండ్రి మానేపల్లి గున్నేశ్వరరావు. తల్లి సత్యశ్యామలాంబ. ఏడుగురి సంతానంలో ఈయన మొదటివారు. ఇతనికి రాజమండ్రి ఆర్యపురంలో తొలుత అక్షరాభ్యాసం జరిగింది. ప్రాథమిక విద్య ఒంగోలులోని ప్రభుత్వ బేసిక్ ట్రైనింగు స్కూల్లోను, మోదల్స్కూల్లోను, టెక్కలి బోర్డు హైస్కూల్లోను, తరువాత తూర్పుగోదావరి జిల్లా రాజోలు బోర్డు హైస్కూల్లోను, ఆ తరువాత రాజమండ్రి మున్సిపల్ హైస్కూల్లోను, ఎస్.ఎస్.ఎల్.సి. లోనికి వచ్చిన తరువాత తొలి నెలలో పశ్చిమ గోదావరి జిల్లా చింతల పూడి హైస్కూల్లోను, 1958 అక్టోబరు నుండి 1959 మార్చి వరకు శ్రీకాకుళం జిల్లా చీపురుపల్లి బోర్డు హైస్కూల్లోను చదివి ఎస్.ఎస్.ఎల్.సి ద్వితీయ శ్రేణిలో ఉత్తీర్ణులయ్యారు. తండ్రి వృత్తిరీత్యా బదిలీ కావడంచేత ఇన్ని ప్రాంతాల్లో ప్రాథమిక విద్య పూర్తి చేయాల్సి వచ్చింది.

అనంతరం కళాశాల విద్య విజయనగరం మహారాజ కళాశాల్లో జరిగింది. అక్కడ పి.యు.సి బి.ఎస్.సి పూర్తి చేసి ప్రభుత్వోగ్యంలో చేరారు. 1967లో ఇంగ్లీష్, తెలుగు, హిస్టరీ మొదలైన అంశాలతో బి.ఎ డిగ్రీ కూడా పూర్తి చేశారు. ప్రభుత్వోద్యోగంలో ఉండడం వలన 1972 లో ఎం.ఎ. ఇంగ్లీష్ ద్వితీయశ్రేణిలో ఉత్తీర్ణులయ్యారు. 1977 డిశంబరు చివర్లో గ్రేడ్ వన్ తెలుగు పండిట్నుండి జూనియర్ లెక్చరర్గా పదోన్నతి పొందారు. తరువాత 1985 మార్చిలో ప్రభుత్వ డిగ్రీ కళాశాల అధ్యాపకునిగి పదోన్నతి పొంది ప్రభుత్వ నిబంధనల ప్రకారం 1-1-96 నుండి రీడర్ స్థాయికి ఎదిగి 31-5-2002 లో శ్రీకాకుళం ప్రభుత్వ మహిళా డిగ్రీ కళాశాల్లో పదవీ విరమణ చేశారు.

1992లో హైదరాబాద్ తెలుగు యూనివర్శిటీలో "శ్రీకాకుళ గిరిజన రైతాంగ పోరాటం ప్రజా సాహిత్యం' అనే అంశంపై సిద్ధాంత వ్యాసం సమర్పించి పిహెచ్.డి.డిగ్రీ పొందారు. విశాఖ జిల్లా యలమంచిలి పట్టణంలో 1974లో 'అవగాహన' పేరుతో ఆధునిక ఆలోచనా వీచిక అనే సాహిత్యోద్యమ సంస్థను స్థాపించి అక్కడే స్థిర నివాసం ఏర్పాటు చేసుకున్నారు. "అవగాహన" గ్రంథాలయం ఎందరో

లక్షణం లేకపోతే ఆ చదువు నిరర్థకమని- ఆది ఉప్పులేని కూరలాంటి దంటూ ఆ శతకకర్త చెప్పిన మంచి మాటలివి...
"చదువది యొంత గల్గిన రసజ్ఞత యించుక చాలకున్న నా/ చదువు నిరర్థకంబు గుణసంయుతు లెవ్వరు మెచ్చరెచ్చటం/ బదునుగ మంచికూర నలపాకము చేసినదైన నందు నిం/ పొదవెడు నుప్పులేక రుచి పుట్టగ నేర్చునటయ్య భాస్కరా"।

ఉదాత్తంగా చెప్పాడు వేమన. ఇక మారవి రచించిన భాస్కర శతకం సామాజిక విలువలకు నిలువుటద్దం. ఎంత చదివినా రసజ్ఞత, స్పందించే గుణం, మానవీయ

ఇతర సాహితీ ప్రక్రియల్లో కథా కథన పద్ధతి, వర్ణనలు, రసం, ఉదాత్తత తదితర లక్షణాలకే పెద్దపీట దక్కుతుంది. అవసరమైన చోట అలతియలతిగా సామాజిక విలువల ప్రస్తావన జరుగుతుంది. కానీ శతకం విషయంలో మాత్రం నైతిక వర్తనంతో కూడిన సామాజిక విలువలే ప్రధానాంశాలు. మానవ మనస్తత్వ చిత్రణతో పాటు మనిషి మనుగడ ప్రశ్నార్థకం కాకుండా పిలైన ధర్మసూత్రాలు, సత్య వచనాలు ఇందులో కనిపిస్తాయి. మొత్తమ్మీద సమగ్ర సమాజ నైతిక విలువల పతాకలు శతకాలు. కాబట్టి పిల్లలకు శతకాలతో చెలిమి చేయిస్తే, వాళ్ళ ఉత్తమ పౌరులుగా ఎదుగుతారు. ఆ ఎదుగుదలే మెరుగైన సమాజానికి పునాది.

డా॥ సిరిసెట్టి సత్యనారాయణ
తెలుగు శాఖాధ్యక్షులు, శ్రీగురజాడ అప్పారావు ప్రభుత్వ డిగ్రీ కళాశాల, యలమంచిలి, విశాఖపట్నం జిల్లా.
98494 16374

3.

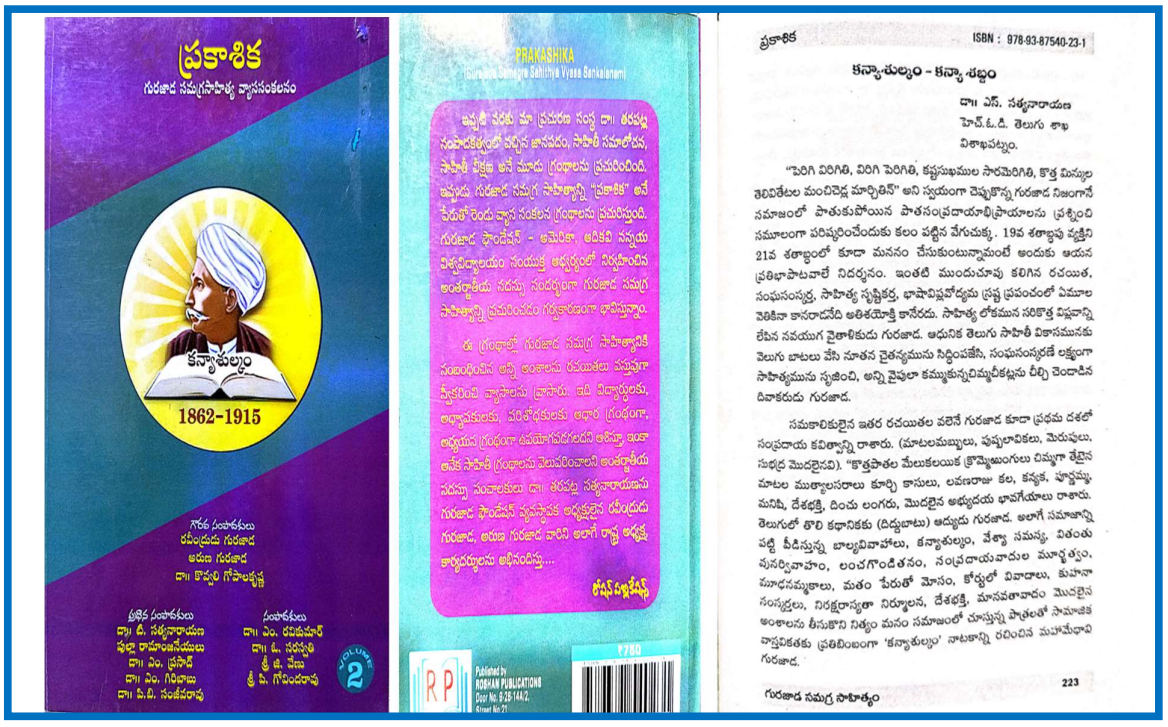

3.Mr T.Appa Rao

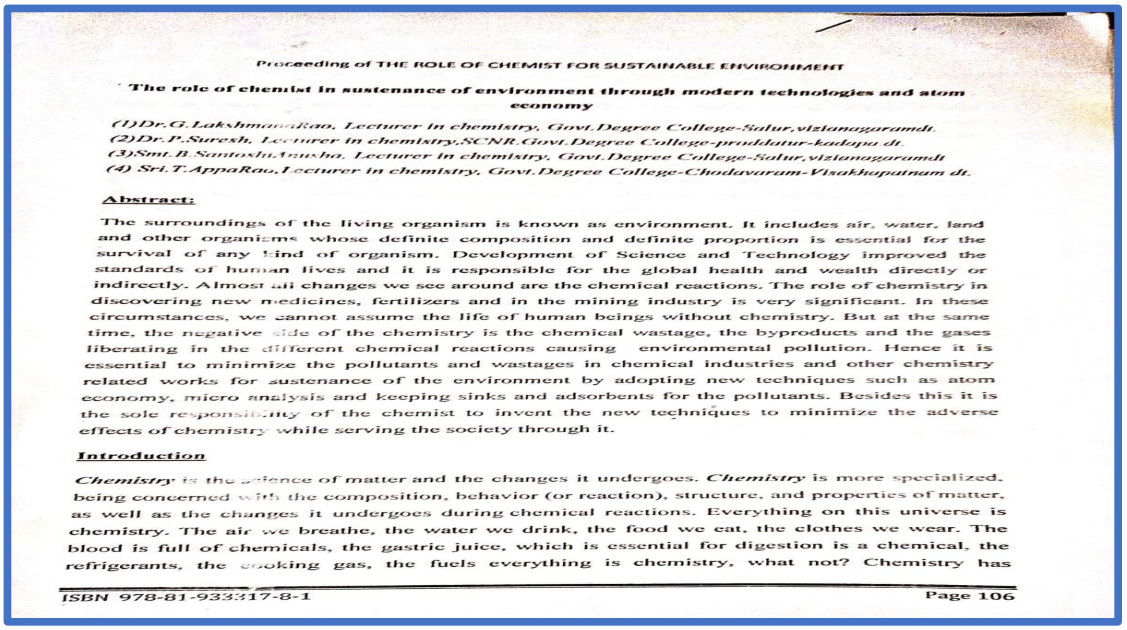

Proceeding of THE ROLE OF CHEMIST FOR SUSTAINABLE ENVIRONMENT

The role of chemist in sustenance of environment through modern technologies and atom economy

(1) Dr.G.Lakshmana Rao, Lecturer in chemistry, Govt.Degree College-Salur,vizianagaramdt.
(2) Dr.P.Suresh, Lecturer in chemistry,SCNR.Govt.Degree College-proddatur-kadapa dt.
(3) Smt.B.Santoshi Anusha, Lecturer in chemistry, Govt.Degree College-Salur,vizianagaramdt
(4) Sri.T.AppaRao,Lecturer in chemistry, Govt.Degree College-Chodavaram-Visakhapatnam dt.

Abstract:

The surroundings of the living organism is known as environment. It includes air, water, land and other organisms whose definite composition and definite proportion is essential for the survival of any kind of organism. Development of Science and Technology improved the standards of human lives and it is responsible for the global health and wealth directly or indirectly. Almost all changes we see around are the chemical reactions. The role of chemistry in discovering new medicines, fertilizers and in the mining industry is very significant. In these circumstances, we cannot assume the life of human beings without chemistry. But at the same time, the negative side of the chemistry is the chemical wastage, the byproducts and the gases liberating in the different chemical reactions causing environmental pollution. Hence it is essential to minimize the pollutants and wastages in chemical industries and other chemistry related works for sustenance of the environment by adopting new techniques such as atom economy, micro analysis and keeping sinks and adsorbents for the pollutants. Besides this it is the sole responsibility of the chemist to invent the new techniques to minimize the adverse effects of chemistry while serving the society through it.

Introduction

Chemistry is the science of matter and the changes it undergoes. *Chemistry* is more specialized, being concerned with the composition, behavior (or reaction), structure, and properties of matter, as well as the changes it undergoes during chemical reactions. Everything on this universe is chemistry. The air we breathe, the water we drink, the food we eat, the clothes we wear. The blood is full of chemicals, the gastric juice, which is essential for digestion is a chemical, the refrigerants, the cooking gas, the fuels everything is chemistry, what not? Chemistry has

ISBN 978-81-933417-8-1

11.Real-time Analysis for Pollution:Analytical methodologies need to be further developed to allow for real-time, in-process monitoring and control prior to the formation of hazardous substances.

12. Inherently Safer Chemistry for Accident Prevention: Substances and the form of a substance used in a chemical process should be chosen to minimize potential for chemical accidents, including releases, explosions, and fires.

Adoption of Synthetic techniques

Novel or enhanced synthetic techniques can often provide improved environmental performance or enable better adherence to the principles of green chemistry.

For example:

Carbon dioxide as blowing agent:

Polystyrene foam is a common material used in packing and food transportation. Traditionally, CFC and other ozone-depleting chemicals were used in the production process of the foam sheets, presenting a serious environmentalhazard. Flammable, explosive, and, in some cases toxic hydrocarbons have also been used as CFC replacements, but they present their own problems. Dow Chemical discovered that supercritical carbon dioxide works equally as well as a blowing agent, without the need for hazardous substances, allowing the polystyrene to be more easily recycled. The CO_2 used in the process is reused from other industries, so the net carbon released from the process is zero.

Reference:

1. Anastas, Paul T.; Warner, John C. (1998). *Green chemistry: theory and practice*. Oxford [England]; New York: Oxford University Press. ISBN 9780198502340.